Vol 2 Issue 10 April 2013

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 10, April. 2013
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

GRT

चीन तथा भारतीय दार्शनिक चिंतन में निहित इतिहास दृष्टि

राखी उपाध्याय , जे.वी.एस. रौथान

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
एसोसिएट प्रोफेसर, जन्तु विज्ञान विभाग
डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून

सारांश:

हमारी ऐतिहासिक चेतना काल के एक–दूसरे से विपरीत ध्रुवों को जोड़कर 'विरोधों की इकाई' के रूप में हमको मानवीय संस्कृति की निरन्तरा का अनुभव प्रदान करती है। यह निरन्तरता एकता का अनुभव प्रदान करती है। यह निरन्तरता एकता का अनुभव प्रदान करती है। यह एकता और निरन्तरता, हमारे बौद्धिक सांस्कृतिक क्षेत्र में अधिक स्पष्ट होती है। महान विचारकों के सिद्धान्त, व्यवस्थाएँ और दार्षनिक प्रत्यय बिना व्याख्या के अर्थहीन होते हैं और व्याख्या की यह प्रक्रिया इतिहास क्रम में कभी पूर्ण विराम तक नहीं पहुँचती। इतिहास भाषा और कला के समान मूलतः रचनाकार 'ईश्वर' की कल्पना मनुष्य रूप में करता है, अर्थात् मानवीय दृष्टि उसकी सारी प्रक्रिया में निहित है। वर्तमान अनुभव जगत में ऐतिहासिक व्यक्तित्व के अतीत के अनुभव को अन्तर्निहित माना गया है। इतिहास में आत्मिक और विचार प्रक्रिया को अधिक महत्त्व दिया गया है। चीनी और भारतीय चिन्तन परम्पराओं का आधार भिन्न है। भारतीय चिन्तन में आत्मभाव की खोज तथा चीनी व्यावहारिक दृष्टि से इतिहास को जीवनषैली के अन्वेशण की पद्धति के रूप में स्वीकार किया है।

कुँजी शब्द :

इतिहास दृष्टि, दर्शनिक चिन्तन, भारतीय दर्शन, चीनी दर्शन

प्रस्तावना :–

प्राचीन सामी और मिस्त्री तथा यहूदी, इस्लामी और ईसाई इतिहास दर्शन में दैवी और ईश्वरी इच्छा और विधान का महत्त्व स्वीकार किया गया है। इसके विपरीत यूनानी और रोमीय इतिहास चिन्तन जो कि आधुनिक, व्यापक और गंभीर इतिहास चिन्तन रहा है। इसका आधार बौद्धिक रहा है। उसमें निरनतर मानवीय बौद्धिक प्रक्रिया से वस्तु के यथार्थ को समझने ओर उसके माध्यम से परम सत्य को विवेचित करने का प्रयत्न निहित रहा है। परिणाम स्वरूप आधुनिक यूरोप की इतिहास दृष्टियाँ मनुष्य के अतीत को इतिहास के घटनाक्रम (वस्तुजगत) के रूप में ग्रहण करती हैं। ऐतिहासिक व्यक्तित्व अथवा ऐतिहासिक मानस के रूप में अतीत के अनुभव को वर्तमान अनुभव जगत में अंतर्निहित माना गया है और वैज्ञानिक नियमों की अपेक्षा इतिहास में आत्मिक और विचार प्रक्रिया को अधिक महत्त्व दिया गया है। इन दृष्टियों और चिन्तन परंपराओं की अपेक्षा चीनी और भारतीय इतिहास चिन्तन का आधार भिन्न रहा है। चीनी व्यावहारिक दृष्टि से इतिहास को 'चिंताओं' अर्थात् जीवन शैली के अन्वेशण की पद्धति के रूप में माना है। भारतीय चिन्तन में आत्मतत्त्व की खोज प्रारंभ से हो चुकी थी, अतः इतिहास संबंधी उसका दृष्टिकोण प्रत्यक्ष घटनाक्रम और प्रत्यक्ष वस्तु के अनुभवों से मुक्ति का रहा है।

चीनी दार्शनिक चिन्तन ऐहिक आधार और व्यावहारिक उपयोगिता के दृष्टि कोण पर अग्रसर हुआ है। परिणाम स्वरूप समाज की निरन्तरता और विकासशीलता सदा उसके सामने प्रत्यक्ष रही है। समाज की इस धारणा के कारण चीनी दृष्टि में वंश परम्परा, पूर्वजों और महापुरुषों का बहुत अधिक महत्त्व रहा है। इसलिए उनका प्राचीन देवता 'थ्यान' मानव पूर्वज ही है। इसी देवता के द्वारा अनुमति पाकर चीनी सम्राट प्राकृतिक नियमों के अनुसार राज्य का संचालन करता था। अनुशासन के अनुसार व्यवस्था न चला पाने पर थ्यान अपनी अनुमति (मिङ) वापस ले लेता है। यह चीनी समाज में पूर्वजों के अनुशासन और महत्त्व का प्रतीक है। मनुष्य की उच्च आत्मा (हुन) 'थ्यान' (जो पूर्वजों का प्रतीक ही है) के संरक्षण में जाकर अपनी वंश परम्परा का नियमन और नियंत्रण करती है। वंश परम्परा के साथ विकसित होने वाली सामाजिक व्यवस्था को चीनी प्राकृतिक विधान के समान विकसनशील मानते हैं। इस विकास में स्थिति (यिन) और गति (याङ) दोनों की प्रक्रिया देखी जा सकती है और यही इतिहास का प्रवाह है। स्थिति (यिन) शांत और संतुलित है और गति (याङ) अतृप्त और विक्षिप्त है। दोनों विरोधी होकर भी प्रत्येक क्षण एक दूसरे में संक्रमण करते हुए जीवनक्रम के सहयोगी होती हैं। बाद में इस विकासवाद (जो आधुनिक वैज्ञानिक विकासवाद के समान है।) के आधार पर जापानी इतिहास दृष्टि काल क्रम को अवनति और उन्नति के रूप में देखती है। वस्तुतः जापानी इतिहास चिंतकों ने उन्नति और अवनति के दृश्टिकोण को बौद्ध प्रभाव से विकसित किया है।

महान चीनी चिन्तन कनफ्यूशियस ने समाज और न प्रकृति की व्यवस्था को इतिहास में प्रतिबिम्बित माना। कनफ्यूशियस ने समाज की विभिन्न व्यवस्थाओं के रूप में प्रकृति की भौतिक प्रक्रिया को प्रतिबिम्ब होने के क्रम को इतिहास में स्वीकार किया। इस प्रकार इनकी इतिहास की परिकल्पना में समाज और उसकी व्यवस्था के रूपों का अत्यधिक महत्त्व है। और यही कारण है कि चीनी इतिहास चिन्तन में सभ्यता के विकास का मूल संतुलन और औचित्य (ली) में है। चीन में बौद्धधर्म के प्रभाव के साथ कनफ़्यूशियस के दर्शन को नया रूप मिला। चून्ही ने संतुलन और समीकरण से पंचत भूतों यानी काश्ठ, धातु, अग्नि, जल और भूमि का विकास माना। चू–ही ने 'थ्यान' को नियम मानकर इस विकासक्रम को

Title : *चीन तथा भारतीय दार्शनिक चिंतन में निहित इतिहास दृष्टि*
Source:Golden Research Thoughts [2231-5063] *राखी उपाध्याय , जे.वी.एस. रौथान* **yr:2013 vol:2 iss:10**

उसके आधार पर संचालित माना। इन पंच भूतों को प्रेम (जेन), सदाचार (ज़ैन), श्रद्धा (चुङ्), बुद्धिमत्ता (चिह्न) और हार्दिकता (सिन) के नैतिक भावों के प्रतीक रूप में माना गया। परमतत्त्व (ताई) की शक्ति (की) संतुलन और सामंजस्य (ली) के आधार पर गतिशील होती है। 'ली' अर्थात् विकासक्रम के संतुलन को नैतिक मानकर यह विचारक सारी इतिहासदृष्टि को नैतिक आधार प्रदान करता है।

भारतीय इतिहास दृष्टि को समझने के लिए उसकी दार्शनिक चिन्तन पद्धतियों को जानना अति आवश्यक है। विश्व और प्रकृति की अवधारणा, काल की परिकल्पना, आत्मतत्त्व का विकास, सृष्टि का नियति चक्र और प्रवृत्ति पर बल आदि भारतीय दर्शन के ऐसे तत्त्व हैं, जिनसे उसकी इतिहास दृष्टि निरूपित होती है। इस कारण इतिहास के घटनाक्रम और मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन क्रम को महत्त्व नहीं मिल सका।

भारतीय इतिहास बोध प्राचीन काल से ही मानवात्मा के काल के अनन्त, अद्वैत, शाश्वत प्रवाह में मूल्यों के अनेक सर्जनात्मक स्तरों पर क्रियाशील संचरण के रूप में रहा है। इसलिए इस देश में मानव सर्जनशीलता को संस्कृति के विविध पक्षों और मूल्यों में सुरक्षित रखने का जितना उपक्रम रहा, उतना अलग–अलग घटनाओं, सामाजिक इकाइयों और व्यक्तिगत जीवनियों पर ध्यान नहीं दिया गया।

भारतीय जड़वादी चार्वाक दर्शन ने मनुष्य को पूर्णतया भूतों से निर्मित माना है। उनके अनुसार मनुष्य चैतन्य है, किन्तु चैतन्य शरीर का विशेश गुण है और उसकी उत्पत्ति भौतिक तत्त्वों से होती है। यह जड़वादी दर्शन अस्तित्व को शरीर में और वर्तमान जीवन तक ही सीमित मानता है। शरीर द्वारा सुख–प्राप्ति को एक मात्र लक्ष्य स्वीकार करता है। ईश्वर, धर्म और मोक्ष को अस्वीकार करता है। ईश्वर, धर्म और मोक्ष को अस्वीकार करने के साथ यह जीवन दृष्टि वस्तु के अस्तित्व और जीवन के क्रम को भी नहीं मानती, अतः किसी इतिहास क्रम पर इस विचारधारा के लोगों का विश्वास नहीं रहा है।

जैनवादी अनीश्वरवादी है, पर चैतन्य रूप आत्म तत्त्व को स्वीकार करता है। जैन चिन्तन में जड़द्रव्यों का विचार बहुत महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने जड़तत्त्व को 'पुद्गल' कहा है जिसका अर्थ संयुक्त और विभक्त हो सकने वाला तत्त्व है। पुद्गल का सबसे छोटा अंश अणु है और अणुओं के संयोग–वियोग से पुद्गल रूप समस्त वस्तु जगत का विकास और विस्तार होता है। इन जड़ द्रव्यों के अतिरिक्त इनकों संघटनक्रम में लाने वाले द्रव्य हैं– आकाश, काल, धर्म और अधर्म। अस्तिकाय द्रव्यों का विस्तार आकाश के बिना संभव नहीं है।

जैन चिन्तन पुद्गल रूप समस्त वस्तु जगत को तात्त्विक नहीं मानता। ईश्वर को न मानकर और वस्तुवादी सापेक्षवादी होकर भी ये चिंतक आत्मा, ज्ञान और मोक्ष की व्यापक भारतीय परिकल्पनाओं को स्वीकार करते हैं। वस्तुओं की यथार्थता और घटनाक्रम (कर्मप्रवाह) को बंधन रूप असत्य मानकर जैन चिन्तन इतिहास के कालक्रम को अस्वीकार कर देता है। वस्तुजगत और कालक्रम के बन्धनों से ज्ञान के द्वारा मुक्त होकर चेतना का शुद्ध ज्ञान और अनन्तता का अनुभव ही जब लक्ष्य है, तो भौतिक घटनाओं, परिस्थितियों, पात्रों की ऐतिहासिक अनुभूति का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

बौद्ध दर्शन का मूलाधार संसार की क्षण भंगुरता है। क्षणिक विषयों में आसक्त होकर मनुष्य पुनर्जन्म और बंधन का दुख झेलता है। बुद्ध ने अपने भाव चक्र के निरूपण में दुःख के कारणों की खोज करके अंततः अज्ञान को ही उसका आदि या मौलिक कारण माना है। इस दुःख के विरोध को निर्वाण कहा गया है। बौद्ध चिंतकों ने यह स्थापित किया है कि वस्तु का अस्तित्व मिटाने के लिए बुद्ध ने आत्मा को, अस्वीकार करते हुए जीवन के कार्य कारण रूप नैरंतर्य को स्वीकार किया है। पुनर्जन्म का अर्थ नित्य आत्मा का दूसरा शरीर ग्रहण नहीं है, वरन् वर्तमान जीवन की अंतिम अवस्था से भविष्य जीवन की प्रथम अवस्था की उत्पत्ति है। बौद्ध चिंतन के इस प्रारंभिक रूप में भारतीय व्यापक चिंतन की मूलधारा निहित है। इस कारण धर्म की उपलब्धि और निर्वाण की प्राप्ति ही इस विचारधारा के परम लक्ष्य रहे हैं। इसके सामने लौकिक जीवन क्रम और व्यक्तिगत चरित्र को महत्त्व देना संभव नहीं हो सका।

बौद्ध चिंतन की एक विचारधारा जगत (बाह्य) और चित्त दोनों को स्वीकार करती है। बाह्य वस्तुओं के अस्तित्व को न स्वीकार किया जाय तो बाह्य वस्तु की प्रतीति कैसे होगी। प्रत्यक्ष वस्तुओं के जो हम आकार देखते हैं, वे ज्ञान के आकार हैं और क्योंकि बाह्य वस्तु का ज्ञान वस्तुजनिक मानसिक आकारों के अनुमान के द्वारा होता है। इसको बाह्यानुमेयवाद कहते हैं। इनकी तुलना में वैभाशिकों को बाह्य प्रत्यक्षवादी कहा गया है। ये बाह्य वस्तु और चित्त के अस्तित्व को मानते हैं, पर इनके अनुसार वस्तु का ज्ञान प्रत्यक्ष मात्र से संभव होता है। इन विचारकों की दृष्टि में वस्तु जगत की स्वीकृति है और उसका आधार चित्त के द्वारा प्राप्त ज्ञान की मान्यता है। अतः इतिहास के घटनाक्रम और उसके अंतर्वर्ती कारणों की परिकल्पना की ओर प्रवृत्त होना संभव था। परन्तु वस्तु के बारे में ऐसा विवेचन करने के बाद भी अंततः निर्वाण की ओर प्रवृत्ति और पारलौकिक जीवन की आस्था न लोगों को जीवन के लौकिक इतिवृत्त से उदासीन ही रखा। इसके अतिरिक्त इन विचारों का अधिक प्रचार नहीं हो सका, जिसका कोई व्यापक प्रभाव जनजीवन पर पड़ता है।

भारतीय दर्शन कोरे तत्त्ववाद के रूप में नहीं हैं, उनमें तत्त्वचिंतन के साथ सत्य का ज्ञान और उसके साक्षात्कार का प्रयत्न भी निहित है। प्रत्येक दर्शन ने जीवन के उन्नयन या उसकी मुक्ति के लिए मार्ग भी दिखाया है। न्याय तर्क प्रधान वस्तु वादी दर्शन है। इस दर्शन में वस्तु और घटना की स्थिति स्वतंत्र मानकर, उनके आधार पर मानवीय ज्ञान या अनुभव को स्वीकार किया गया है। यह चिन्तन एक इतिहास दृष्टि प्रदान कर सकता था। जिसके अनुसार अतीत के घटनाक्रम की स्वतंत्र स्थिति को माना जा सकता है, और इतिहासकार अनुभव रूप उसकी प्रक्रिया को परिकल्पित करने में समर्थ हो सकता है। परन्तु नैयायिको के सामने अन्य भारतीय दर्शनों के समान आत्मा के मोक्ष का उद्देश्य है।

न्याय के समान वैशेशिक दर्शन भी वस्तुवादी है। इसके अनुसार द्रव्य गुण कर्म से भिन्न होकर भी उनका आश्रय स्वयं है। इस दर्शन के अनुसार समस्त सृष्टिक्रम, सृश्टिप्रलय, ईश्वर की इच्छा से संचालित है। यहाँ धार्मिक दैववादी इतिहास दृष्टि का आधार ढूँढ़ा जा सकता था, परन्तु दिक्काल आदि की अनन्त कल्पना के साथ सृष्टि और लय का अनादि प्रवाह मान लेने के कारण हमारा अपना इतिहास बोध नगण्य हो जाता है।

सांख्य दर्शन के अनुसार कार्य कारण में में विद्यमान रहता है, इस प्रकार विश्व और प्रकृति अवयवी है। सांख्य व्यक्ति और विश्व के विकासक्रम को एक ही दृष्टि से विवेचित करता है अतः उसकी दृष्टि में सारा क्रमबंधन मोक्ष की अनवरत प्रक्रिया है। उसमें देशकाल का सीमित और घटनाक्रम का रूप कुछ भी महत्त्व नहीं रखता। जातियों, वंशों या समाजों का इतिहास वस्तु जगत के भौतिक परिवर्तनों के समान वास्तविक अथवा तात्त्विक नहीं माना जा सकता।

योग दर्शन सांख्य के बहुत निकट है। योग में केवल ईश्वर को स्वीकार किया गया है। चित्त के विकार और परिणामों पर आत्मा का प्रकाश पड़ता और विवेक ज्ञान के प्रभाव में उन्हीं में आत्मा अपने को देखती है। योग द्वारा चित्त वृत्तियों के निरोध से आत्मसाक्षात्कार संभव होता है। योग आत्म तत्त्व पर बल देने के कारण सृष्टि क्रम को चित्त के कार्यप्रवाह के रूप में अस्वीकार करता है।

मीमांसा दर्शन प्रत्यक्षवादी होने के कारण जगत और उसके विषयों को सत्य मानता है। सृष्टिक्रम कर्म के नियम के अनुसार संचालित होता है। मीमांसा दर्शन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है। वासनाओं को दमन करके पापकर्म से विरत होकर मनुष्य जब सुख प्राप्ति के निमित्त सब कर्मों को छोड़ देता है, तब वह पुनर्जनम और भवबंधन से मुक्त हो जाता है। अतः जगत और लौकिक जीवन के प्रति इनके दृष्टिकोण में कोई अंतर नहीं हो सका।

वेदान्त में वेदों के तत्त्व चिंतन का सूक्ष्म विकास हुआ है। वैदिक साहित्य की सही समझ न होने के कारण पाश्चात्य विद्वानों को उनके अनुवर्ती भारतीय विद्वानों ने वेदों में बहुदेववाद, एक सत्तावाद, सर्वेश्वर वाद आदि की परिकल्पनाएँ की हैं। परन्तु वेदों के संबंध में इस केन्द्रीय विचार को ध्यान में रखना होगा कि वेदान्त देवता ईश्वर के रूप हैं। आगे चलकर वेदान्त दर्शन के अद्वैती तथा बाद के विशिष्ट द्वैती, शुद्धा द्वैती चिन्तन ने व्यापक रूप से भारतीय धर्म, दर्शन, चिनत ने व्यापक रूप से भारतीय धर्म, दर्शन, साधन और साहित्य को प्रभावित किया, उसका रहस्य

भी यही है कि आत्मा, सत और ब्रह्म संबंधी उपनिशदों का अनुभवपरक चिन्तन तथा साक्षात्कार भी भारतीय जीवन और संस्कृति के गहरे प्रवेश कर चुका था।

भारतीय संपूर्ण जीवन दृष्टि आत्मा के मुक्ति मार्ग या अभ्यंतर प्रयाण की ओर लगी रही है और उसने जीवन तथा जगत के बाहरी घटनाक्रम को अपने काल प्रवाह में कभी महत्त्व नहीं दिया। भारतीय मस्तिष्क में एक ओर काल का अनन्त प्रवाह है और दूसरी ओर वस्तु जगत का अनन्त प्रवाह है और दूसरी ओर वस्तु जगत का क्षण–क्षण परिवर्तित रूप है। चार्वाक को छोड़कर प्रायः सभी ने इस क्षण भंगुरता और परिवर्तनशीलता का अतिक्रमण करके अनेक रूपों में अनन्त जीवन प्रवाह का प्रतिपादन किया है। भारतीय जीवन दृष्टि बराबर इस भौतिक जगत और घटनाक्रम के परे किसी अनन्त जीवन और अनुभव की खोज करती रही है।

परिणाम स्वरूप भारतीयों ने मानवीय भौतिक जीवन के घटनाक्रम को कभी महत्त्व नहीं दिया। मानवीय जीवनक्रम अपने भौतिक रूप में विश्व के प्राकृतिक विधान से अलग नहीं है। सारी सृष्टि की रचना प्रक्रिया के प्रवाह में मानवजीवन और उसका इतिहास क्रम एक अवयव रूप है। ऋग्वेद की 'आदि पुरुष' और गीता की 'विराट पुरुष' की कल्पना एक ओर मनुष्य के व्यक्तित्व को समस्त विश्व रचना के साथ समरसता का विराट अनुभव प्रदान करती है, तो दूसरी ओर उसके देशकाल के एक बिन्दु पर सीमित व्यक्ति को नगण्य और उपेक्षणीय बनाती है इस कल्पना में एक व्यापक और असीम अंगी के माध्यम से समस्त प्राकृतिक तथा सामाजिक शक्तियों तथा तत्त्वों का समन्वय है, परन्तु इसकी विराट और भव्य समष्टि रूप कल्पना व्यक्ति के जीवन और समाज की प्रक्रिया के ऐतिहासिक क्रम को नितांत असंगत और महत्त्वहीन बना देती है।

ऐसी स्थिति में इतिहास को मानवीय बोध, मानवीय चेष्टा और सामाजिक प्रक्रिया के रूप में देखना और समझाना नहीं हो सकता था। जिन नैतिक मूल्यों का प्रतिपादन किया गया, वे मानवीय स्वतंत्रता और सर्जनशीलता को एक सीमा के आगे व्यापक प्रवृत्तियों पर अधिक बल देते हैं। दूसरी ओर स्वतः आध्यात्मिक प्रयत्नों की पीठिका का काम देने लगते हैं। यही कारण है कि भारतीय इतिहास दृष्टि व्यक्तियों को महत्त्व न देकर युगजीवन की प्रवृत्तियों को ग्रहण करने की चेष्टा करती है और साथ ही घटनाक्रम को देखने के बजाय वह आन्दोलनों के प्रवाह को अधिक महत्त्व देती है। यहाँ यूरोपीय और भारतीय इतिहास दृष्टियों के मौलिक अन्तर का विवेचन करते हुए यह कहना आवश्यक है कि यूरोप ने अपने इतिहास चिन्तन की यात्रा में कभी वस्तु जगत के आधार को छोड़ा नहीं, भले ही वस्तु के अंतवर्ती परमतत्त्व और मौलिक कार्यकारण की प्रक्रिया के बारे में कितना ही वहाँ उहापोह हुआ हो। इसलिए अनेक इतिहास दृष्टियों के होते हुए भी यूरोप में इतिहासक्रम की अवहेलना नहीं की गई। उनके वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विकास के मूल में भी यह इतिहास दृष्टि है। इसके विपरीत भारत ने प्रारम्भ से ही वस्तुजगत की अपेक्षा आत्मतत्त्व को अधिक महत्त्व दिया, भौतिक जीवन की अपेक्षा आध्यात्मिक जीवन को श्रेष्ठ माना।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.हमारी सांस्कृतिक एकता – रामधारी सिंह दिनकर
2.मानवीय संस्कृति का रचनात्मक आयाम, प्रो. रघुवंश
3.दर्शन शास्त्र का इतिहास – डॉ. देवराज
4.राधाकृष्णनन – भाग–1
5.हिन्दी साहित्य की भूमिका, डॉ. हजारी प्रसादी द्विवेदी
6.उत्तरी भातर की संत परम्परा – परशुराम चतुर्वेदी

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net